Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/234
Peer Reviewed & Refereed Journal, MAY-JUNE 2024, Vol- 13/83

स्मार्ट शहर में मलिन बस्तियों की चुनौतियों का अध्ययन

डॉ. संदीप सिंह वर्मन
सह आचार्य हिंदू पीजी कॉलेज मुरादाबाद

Paper Received On: 20 May 2024
Peer Reviewed On: 24 June 2024
Published On: 01 July 2024

Abstract

स्मार्ट शहरों को अक्सर हमारे समय की जनसंख्या वृद्धि या जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों से निपटने का एक अच्छा तरीका माना जाता है। इस संदर्भ में विकसित की जाने वाली अवधारणाएँ अक्सर इस धारणा पर आधारित होती हैं कि शहरी आबादी अत्यधिक नेटवर्क से जुड़ी हुई है और उसे पर्याप्त रूप से बुनियादी ढाँचा उपलब्ध कराया गया है। वहीं, दुनिया भर में हर चार में से एक शहरी निवासी झुग्गी-झोपड़ी में रहता है। एक साहित्य समीक्षा के आधार पर, हम उन दृष्टिकोणों की जांच करते हैं जो स्मार्ट शहरों और मलिन बस्तियों के बारे में एक साथ सोचते हैं। हम दिखाते हैं कि स्मार्ट शहरों के दृष्टिकोण में अक्सर मलिन बस्तियों को ध्यान में नहीं रखा जाता है और इन अवधारणाओं में अपनाए गए मानकों पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए।
हम शहरों के प्रभुत्व वाली दुनिया में रहते हैं। आधे से अधिक लोग शहरी क्षेत्रों में रहते हैं, और आने वाले वर्षों में यह अनुपात बढ़ता रहेगा। जैसे-जैसे मानव जीवन की वास्तविकता शहरों की ओर स्थानांतरित होती जा रही है, सवाल उठता है कि हम इस आवास को कैसा आकार देना चाहेंगे? इस संदर्भ में एक बड़ी चुनौती आबादी को पानी, ऊर्जा और भोजन जैसे आवश्यक संसाधनों का टिकाऊ तरीके से प्रावधान करना है, जिसे संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों में स्पष्ट रूप से संबोधित किया गया है।

मुख्य शब्द: *स्मार्ट, शहर, मलिन, बस्तियों*

भूमिका

स्मार्ट सिटी को लागू करने के लिए आवश्यक आधुनिक तकनीकों में अक्सर उच्च स्तर की परस्पर संबद्धता और विभिन्न स्रोतों से बड़ी मात्रा में डेटा शामिल होता है। भले ही प्रकाशन इंगित करते हैं कि इन अवधारणाओं में दुर्गम जनसंख्या समूहों को भी शामिल किया जाना चाहिए, सवाल उठता है कि वर्तमान अवधारणाएं संपूर्ण शहरी आबादी और उनकी तीव्र वृद्धि के बारे में पर्याप्त रूप से कैसे सोचती हैं।

यह माना जाता है कि इस प्रकार की बस्तियों में रहने वाली आबादी वर्ष 2050 तक बढ़कर तीन अरब हो जाएगी और इस प्रकार वे शहरी जीवन की वास्तविकता का एक अभिन्न अंग बन जाएंगे। ये अवलोकन बुनियादी ढांचे के मूल्यांकन में तनाव को दर्शाते हैं। एक ओर, लक्ष्य बुनियादी ढांचे को अधिक निकटता से जोड़ना और स्मार्ट अवधारणाओं की मदद से टिकाऊ बुनियादी ढांचे का निर्माण करना है। दूसरी ओर, दुनिया की आबादी का एक बड़ा हिस्सा उन बस्तियों में रहता है जहां परिभाषा के अनुसार कोई बुनियादी ढांचा नहीं है या बहुत खराब है। शोध उपयुक्त रूप से तनाव का वर्णन करता है जब वे सवाल करते हैं कि क्या शहरवासियों की जरूरतें वास्तव में पूरी हो रही हैं जब उन्नत

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रौद्योगिकियों को आबादी की बुनियादी जरूरतों को पूरा किए बिना लागू किया जाता है। हम इस तनाव पर प्रकाश डालना चाहते हैं और वैश्विक स्तर पर पूछना चाहते हैं कि स्मार्ट सिटी की अवधारणा मलिन बस्तियों या अनौपचारिक बस्तियों के रूप में शहरी गरीबी को किस हद तक ध्यान में रखती है या नहीं। यदि शहरों को स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित करना है तो इन अवधारणाओं में मलिन बस्तियों या अनौपचारिक बस्तियों के बारे में भी सोचना होगा।

बड़ी मात्रा में वैज्ञानिक कार्यों और स्मार्ट शहरों की अवधारणाओं की तुलना में, ऐसे प्रकाशन दुर्लभ हैं जो स्पष्ट रूप से मलिन बस्तियों, अनौपचारिक बस्तियों या पड़ोस पर विचार करते हैं और इन वंचित शहरी क्षेत्रों का भी उल्लेख करते हैं। स्लम निवासियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए आधुनिक (संचार) तकनीक का उपयोग करने वाले ठोस दृष्टिकोण, जैसा कि ऊपर स्मार्ट सिटी की परिभाषा में बताया गया है, पानी या स्वच्छता बुनियादी ढांचे के संदर्भ में कुछ कार्यों तक ही सीमित है। इसके अलावा, मलिन बस्तियों में स्मार्ट स्वास्थ्य अवधारणाओं की जांच करने वाले कार्य को प्रस्तुत पद्धति का उपयोग करके पहचाना नहीं जा सका, हालांकि विभिन्न प्रकार के कार्यों से पता चलता है कि यह मलिन बस्तियों में रहने वाली आबादी है जो अधिक स्वास्थ्य जोखिमों के संपर्क में है।

हम इस बात पर जोर देते हैं कि झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों के लिए जीवन की वास्तविकता किसी अन्यथा परिष्कृत शहरी प्रजाति का विशेष मामला नहीं है। इसके विपरीत, कुछ शहरों में यह अनुमान लगाया गया है कि आधे से अधिक निवासी झुग्गियों में रहते हैं। हाल के वर्षों में कई अध्ययनों से पता चला है कि मलिन बस्तियों में निवासियों की संख्या अनिश्चित है या अक्सर अज्ञात है।

हमारे दृष्टिकोण से शहरों में स्मार्ट मीटर जैसी नई अवधारणाओं को लागू करने से पहले या कम से कम समानांतर में शहरी आबादी की वास्तविक जीवन स्थितियों पर जानकारी इकट्ठा करना आवश्यक है। इससे मलिन बस्तियों और स्मार्ट शहरों से संबंधित डेटा पर अधिक सामान्य चर्चा होती हैरू स्मार्ट शहरों की अवधारणा मौजूदा बुनियादी ढांचे और डेटा की प्रचुरता पर निर्भर करती है। साथ ही, मलिन बस्तियाँ ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ हम बहुत सी जानकारी से वंचित रह जाते हैं। परिभाषा के अनुसार अनौपचारिक बस्तियाँ अक्सर आधिकारिक आँकड़ों में छूट जाती हैं या उपेक्षित होती हैं। इसलिए, इस संदर्भ में मलिन बस्तियों का पता लगाने का एक मजबूत नैतिक महत्व हैरू जहां एक ओर विभिन्न बुनियादी ढांचे के अन्योन्याश्रित उपयोग और विभिन्न डेटा स्रोतों के संग्रह से स्मार्ट प्रौद्योगिकियों का विकास होता है, वहीं दूसरी ओर इससे निगरानी भी हो सकती है। वंचित जनसंख्या समूह.

स्मार्ट शहर में मलिन बस्तियों की चुनौतियों का अध्ययन

दुनिया भर के कई शहरों में मलिन बस्तियाँ एक बड़ी समस्या हैं। इनकी विशेषता अपर्याप्त आवास, ख़राब बुनियादी ढाँचा और बुनियादी सेवाओं की कमी है। झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों को अक्सर हाशिए पर रखा जाता है और उनके साथ भेदभाव किया जाता है, और उन्हें गरीबी, अपराध और स्वास्थ्य समस्याओं सहित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

स्मार्ट शहर वे शहर हैं जो अपने नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं। उनमें अक्सर स्मार्ट परिवहन, स्मार्ट ग्रिड और स्मार्ट बिल्डिंग जैसी सुविधाएं होती हैं। मलिन बस्तियों की चुनौतियों से निपटने के लिए स्मार्ट शहर एक शक्तिशाली उपकरण हो सकते हैं। मलिन बस्तियों में बुनियादी ढांचे और सेवाओं में सुधार

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करके, स्मार्ट शहर झुग्गीवासियों के जीवन को बेहतर बनाने और गरीबी को कम करने में मदद कर सकते हैं।

मलिन बस्तियों की विशेषता अपर्याप्त आवास, ख़राब बुनियादी ढाँचा और बुनियादी सेवाओं की कमी है। झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले लोग अक्सर भीड़-भाड़ वाले, खराब तरीके से बने घरों में रहते हैं, जिनमें साफ पानी, स्वच्छता और बिजली की पहुंच नहीं होती है। उन्हें गरीबी, अपराध और स्वास्थ्य समस्याओं सहित कई अन्य चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है।

मलिन बस्तियाँ अक्सर तेजी से शहरीकरण के कारण बनती हैं। जैसे-जैसे लोग नौकरियों और बेहतर जीवन की तलाश में शहरों की ओर जाते हैं, वे अक्सर मलिन बस्तियों में चले जाते हैं क्योंकि वे अधिक औपचारिक आवास में रहने का जोखिम नहीं उठा सकते। मलिन बस्तियाँ बाढ़ या भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं से भी बन सकती हैं।

मलिन बस्तियों की चुनौतियों से निपटने के लिए स्मार्ट शहर एक शक्तिशाली उपकरण हो सकते हैं। मलिन बस्तियों में बुनियादी ढांचे और सेवाओं में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करके, स्मार्ट शहर झुग्गीवासियों के जीवन को बेहतर बनाने और गरीबी को कम करने में मदद कर सकते हैं।

स्मार्ट शहर मलिन बस्तियों में बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कर सकते हैं। इसमें नई सड़कें और पुल बनाना, बेहतर स्वच्छता प्रदान करना और बिजली प्रदान करने के लिए सौर पैनल स्थापित करना जैसी चीजें शामिल हो सकती हैं।

स्मार्ट शहर झुग्गीवासियों को सेवाएँ प्रदान करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कर सकते हैं। इसमें स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और नौकरी प्रशिक्षण जैसी चीजें शामिल हो सकती हैं।

स्मार्ट शहर झुग्गीवासियों को सशक्त बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कर सकते हैं। इसमें उन्हें सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तक पहुंच प्रदान करना, और उन्हें संगठित होने और अपने अधिकारों की वकालत करने में मदद करना जैसी चीजें शामिल हो सकती हैं।

स्मार्ट शहरों में झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोगों के जीवन में वास्तविक बदलाव लाने की क्षमता है। मलिन बस्तियों में बुनियादी ढांचे और सेवाओं में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करके, स्मार्ट शहर झुग्गीवासियों के जीवन को बेहतर बनाने और गरीबी को कम करने में मदद कर सकते हैं।

हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि स्मार्ट शहर मलिन बस्तियों की समस्याओं के लिए रामबाण नहीं हैं। स्मार्ट शहर केवल तभी प्रभावी हो सकते हैं जब उन्हें झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों की जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाया गया हो। उन्हें ऐसे तरीके से लागू किया जाना चाहिए जो न्यायसंगत और समावेशी हो।

सावधानीपूर्वक योजना और कार्यान्वयन के साथ, स्मार्ट शहर झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों के जीवन को बेहतर बनाने और गरीबी को कम करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकते हैं।

स्मार्ट शहरों में मलिन बस्तियों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

ऽ अत्यधिक भीड़भाड़ झुग्गियां अक्सर अत्यधिक भीड़भाड़ वाली होती हैं, जिससे खराब स्वच्छता और बीमारी फैल सकती है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

- अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा मलिन बस्तियों में अक्सर सड़क, पानी और स्वच्छता जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव होता है। इससे लोगों के लिए इधर-उधर जाना और आवश्यक सेवाओं तक पहुंचना मुश्किल हो सकता है।
- असुरक्षित कार्यकाल झुग्गियों में रहने वाले लोगों के पास अक्सर सुरक्षित कार्यकाल नहीं होता है, जिसका अर्थ है कि उन्हें किसी भी समय बेदखल किया जा सकता है। इससे उनके लिए अपने घरों में निवेश करना या अपने रहने की स्थिति में सुधार करना मुश्किल हो सकता है।
- झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोग अक्सर गरीब होते हैं, जिससे उनके लिए भोजन, कपड़े और आश्रय जैसी बुनियादी आवश्यकताओं को वहन करना मुश्किल हो सकता है।
- झुग्गियों में रहने वाले लोगों के साथ अक्सर सरकार और निजी क्षेत्र द्वारा भेदभाव किया जाता है। इससे उनके लिए नौकरियों, शिक्षा और अन्य आवश्यक सेवाओं तक पहुंच मुश्किल हो सकती है।
- झुग्गी-झोपड़ी उन्नयन के लिए धन मुहैया कराएं सरकार झुग्गी-झोपड़ी उन्नयन परियोजनाओं के लिए धन उपलब्ध करा सकती है। इससे मलिन बस्तियों में बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने और उन्हें अधिक रहने योग्य बनाने में मदद मिल सकती है।
- झुग्गीवासियों के अधिकारों की रक्षा के लिए कानून पारित करेंरू सरकार झुग्गीवासियों के अधिकारों की रक्षा के लिए कानून पारित कर सकती है। इसमें ऐसे कानून शामिल हो सकते हैं जो सुरक्षित कार्यकाल और आवश्यक सेवाओं तक पहुंच की गारंटी देते हैं।
- मलिन बस्तियों के समाधान के लिए निजी क्षेत्र के साथ काम करेंरू सरकार मलिन बस्तियों के समाधान के लिए निजी क्षेत्र के साथ काम कर सकती है। इसमें मलिन बस्तियों में निवेश करने वाले व्यवसायों को कर छूट और अन्य प्रोत्साहन प्रदान करना शामिल हो सकता है।

मलिन बस्तियों को संबोधित करने में निजी क्षेत्र की भी भूमिका है। निजी क्षेत्र यह कर सकता है

- स्लम उन्नयन परियोजनाओं में निवेश करें निजी क्षेत्र स्लम उन्नयन परियोजनाओं में निवेश कर सकता है। इससे मलिन बस्तियों में बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने और उन्हें अधिक रहने योग्य बनाने में मदद मिल सकती है।
- मलिन बस्तियों में रोजगार के अवसर प्रदान करें निजी क्षेत्र मलिन बस्तियों में रोजगार के अवसर प्रदान कर सकता है। इससे गरीबी को कम करने और वहां रहने वाले लोगों की जीवन स्थितियों में सुधार करने में मदद मिल सकती है।
- स्लम उन्नयन परियोजनाओं के लिए दान करें निजी क्षेत्र स्लम उन्नयन परियोजनाओं के लिए दान कर सकता है।

स्मार्ट शहर कई तरीकों से मलिन बस्तियों की चुनौतियों का समाधान कर सकते हैं। इसमे शामिल हैरू

- बुनियादी सेवाओं तक पहुंच प्रदान करना। स्मार्ट शहर झुग्गीवासियों के लिए बुनियादी सेवाओं तक पहुंच में सुधार के लिए आईसीटी का उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, वे यह सुनिश्चित करने के लिए स्मार्ट जल प्रबंधन प्रणालियों का उपयोग कर सकते हैं कि झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों को साफ पानी मिले, और वे झुग्गी-

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

झोपड़ियों में रहने वालों को विश्वसनीय और सस्ती बिजली प्रदान करने के लिए स्मार्ट ग्रिड का उपयोग कर सकते हैं।

- आवास की स्थिति में सुधार. स्मार्ट शहर मलिन बस्तियों में आवास की स्थिति में सुधार के लिए आईसीटी का उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, वे किफायती और टिकाऊ आवास बनाने के लिए 3डी प्रिंटिंग तकनीक का उपयोग कर सकते हैं , और वे झुग्गी बस्तियों की संरचनात्मक अखंडता की निगरानी के लिए सेंसर का उपयोग कर सकते हैं।
- सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देना. स्मार्ट शहर झुग्गीवासियों के लिए सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देने के लिए आईसीटी का उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, वे झुग्गीवासियों को नौकरी के अवसरों से जोड़ने के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग कर सकते हैं, और वे झुग्गीवासियों के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर सकते हैं।
- पर्यावरणीय क्षरण को संबोधित करना। स्मार्ट शहर मलिन बस्तियों में पर्यावरणीय गिरावट को संबोधित करने के लिए आईसीटी का उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, वे मलिन बस्तियों में हवा की गुणवत्ता और पानी की गुणवत्ता की निगरानी के लिए सेंसर का उपयोग कर सकते हैं, और वे पर्यावरणीय समस्याओं के मूल कारणों की पहचान करने और उनका समाधान करने के लिए डेटा एनालिटिक्स का उपयोग कर सकते हैं।
- मलिन बस्तियों को सुरक्षित करना। स्मार्ट शहर मलिन बस्तियों को सुरक्षित करने और उन्हें निवासियों के लिए सुरक्षित बनाने के लिए आईसीटी का उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, वे मलिन बस्तियों में अपराध की निगरानी के लिए सीसीटीवी कैमरों का उपयोग कर सकते हैं, और वे अपराधियों की पहचान करने के लिए चेहरे की पहचान तकनीक का उपयोग कर सकते हैं।

दुनिया भर के कई शहरों के लिए मलिन बस्तियाँ एक बड़ी चुनौती हैं। इनकी विशेषता अक्सर भीड़भाड़, खराब स्वच्छता, अपर्याप्त आवास और बुनियादी सेवाओं तक पहुंच की कमी है। इससे गरीबी, अपराध और बीमारी सहित कई सामाजिक और आर्थिक समस्याएं पैदा हो सकती हैं।

हाल के वर्षों में स्मार्ट शहरों के विकास में रुचि बढ़ी है। स्मार्ट शहर वे शहर हैं जो अपने नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों (आईसीटी) का उपयोग करते हैं। इसमें ट्रैफिक और प्रदूषण की निगरानी के लिए सेंसर का उपयोग करना, सार्वजनिक परिवहन को बेहतर बनाने के लिए डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करना और निर्णय लेने में नागरिकों को शामिल करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करना जैसी चीजें शामिल हो सकती हैं।

जबकि स्मार्ट शहर कई संभावित लाभ प्रदान करते हैं, वे मलिन बस्तियों के लिए कुछ चुनौतियाँ भी पेश करते हैं। उदाहरण के लिए, आईसीटी महंगे हो सकते हैं, और मलिन बस्तियों को इंटरनेट और अन्य आईसीटी नेटवर्क से जोड़ना मुश्किल हो सकता है। इसके अतिरिक्त, मलिन बस्तियाँ अक्सर अनौपचारिक बस्तियों में स्थित होती हैं, जिससे स्मार्ट सिटी परियोजनाओं की योजना बनाना और उन्हें लागू करना मुश्किल हो सकता है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समावेशी, न्यायसंगत और टिकाऊ शहर बनाने के लिए स्मार्ट शहरों में मलिन बस्तियों की चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है। बुनियादी ढांचे में निवेश करके, अनौपचारिक बस्तियों की योजना बनाकर, झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों को सशक्त बनाकर, शिक्षा और प्रशिक्षण में निवेश करके और सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देकर, हम ऐसे स्मार्ट शहर बना सकते हैं जिससे सभी को लाभ हो।

ऊपर उल्लिखित चुनौतियों के अलावा, स्मार्ट शहरों में मलिन बस्तियों के सामने कई अन्य चुनौतियाँ भी हैं। इसमे शामिल है

- जलवायु परिवर्तन। मलिन बस्तियाँ अक्सर उन क्षेत्रों में स्थित होती हैं जो जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशील होते हैं, जैसे तटीय क्षेत्र और बाढ़ की संभावना वाले क्षेत्र। यह उन्हें प्राकृतिक आपदाओं के प्रति अधिक संवेदनशील बना सकता है और उनके सामने आने वाली चुनौतियों को और बढ़ा सकता है।
- तकनीकी। स्मार्ट शहरों में प्रौद्योगिकी का उपयोग मलिन बस्तियों के लिए भी चुनौतियाँ पैदा कर सकता है। उदाहरण के लिए, चेहरे की पहचान तकनीक का उपयोग झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों के साथ भेदभाव करने के लिए किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, डेटा एनालिटिक्स का उपयोग स्लम निवासियों को विज्ञापन और सेवाओं के साथ लक्षित करने के लिए किया जा सकता है जिन्हें वे वहन नहीं कर सकते।
- शासन. स्मार्ट शहरों का प्रशासन मलिन बस्तियों के लिए भी एक चुनौती हो सकता है। उदाहरण के लिए, झुग्गीवासियों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में प्रतिनिधित्व नहीं दिया जा सकता है, या उन्हें स्मार्ट सिटी परियोजनाओं के लाभों से बाहर रखा जा सकता है।

इन चुनौतियों के बावजूद, स्मार्ट शहरों में मलिन बस्तियों के लिए कई अवसर हैं। उदाहरण के लिए, स्मार्ट शहर मलिन बस्तियों में बुनियादी सेवाओं की डिलीवरी में सुधार के लिए आईसीटी का उपयोग कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, स्मार्ट शहर झुग्गीवासियों के लिए नए आर्थिक अवसर पैदा कर सकते हैं। साथ मिलकर काम करके, हम ऐसे स्मार्ट शहर बना सकते हैं जो समावेशी, न्यायसंगत हों,

ऐसे कई कारक हैं जो भारत में मलिन बस्तियों के निर्माण में योगदान करते हैं। इनमें तेजी से शहरीकरण, गरीबी, किफायती आवास की कमी और भेदभाव शामिल हैं।

तीव्र शहरीकरण भारत में झुग्गी-झोपड़ियों के निर्माण के मुख्य चालकों में से एक है। देश की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, और कई लोग नौकरियों और बेहतर जीवन की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर जा रहे हैं। हालाँकि, शहरीकरण की गति ने सभी के लिए पर्याप्त आवास उपलब्ध कराने की सरकार की क्षमता को पीछे छोड़ दिया है।

गरीबी स्लम निर्माण में योगदान देने वाला एक अन्य प्रमुख कारक है। झुग्गियों में रहने वाले अधिकांश लोग गरीब हैं और बेहतर आवास में रहने का जोखिम नहीं उठा सकते। उन्हें अक्सर मलिन बस्तियों में घटिया आवास से समझौता करना पड़ता है क्योंकि यह उनके लिए उपलब्ध एकमात्र विकल्प है।

किफायती आवास की कमी एक और बड़ी समस्या है जो स्लम निर्माण में योगदान करती है। भारत में आवास की लागत तेजी से बढ़ रही है, जिससे लोगों के लिए सभ्य आवास में रहना मुश्किल हो रहा है। यह गरीबों के लिए विशेष

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

रूप से सच है, जो अक्सर झुग्गियों में रहने के लिए मजबूर होते हैं क्योंकि यह उनके लिए उपलब्ध एकमात्र विकल्प है।

भेदभाव भी एक कारक है जो भारत में झुग्गी निर्माण में योगदान देता है। हाशिए पर रहने वाले समूहों, जैसे कि दलित (पहले अछूत के रूप में जाने जाते थे) और आदिवासी लोगों के कई लोगों के साथ आवास बाजार में भेदभाव किया जाता है। इससे उनके लिए मलिन बस्तियों के बाहर किफायती आवास ढूंढना मुश्किल हो जाता है।

मलिन बस्तियों में रहने की स्थिति अक्सर बहुत खराब होती है। झुग्गियों में रहने वाले लोग आम तौर पर अपर्याप्त स्वच्छता वाले भीड़भाड़ वाले, घटिया आवास में रहते हैं। उनके पास अक्सर साफ पानी, बिजली और अन्य बुनियादी सेवाओं तक पहुंच का अभाव होता है।

खराब जीवन स्थितियों के परिणामस्वरूप, झुग्गियों में रहने वाले लोगों को हैजा, टाइफाइड और मलेरिया जैसी बीमारियों से पीड़ित होने की अधिक संभावना है। उनके अपराध और हिंसा का शिकार होने की भी अधिक संभावना है।

भारत सरकार ने मलिन बस्तियों की समस्या के समाधान के लिए कुछ कदम उठाए हैं। हालाँकि, ये प्रयास काफी हद तक असफल रहे हैं। सरकार ने गरीबों के लिए कुछ नई आवास इकाइयाँ बनाई हैं, लेकिन ये इकाइयाँ अक्सर उन लोगों के लिए बहुत महंगी होती हैं जिन्हें इनकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है। सरकार ने मलिन बस्तियों में स्वच्छता में सुधार करने की भी कोशिश की है, लेकिन ये प्रयास काफी हद तक अप्रभावी रहे हैं।

उपसंहार

भारत में मलिन बस्तियों की समस्या जटिल है और इसका कोई आसान समाधान नहीं है। हालाँकि, यह स्पष्ट है कि सरकार को इस समस्या के समाधान के लिए और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। सरकार को गरीबों के लिए अधिक किफायती आवास बनाने, मलिन बस्तियों में स्वच्छता और अन्य सेवाओं में सुधार करने और गरीबी और भेदभाव जैसे मलिन बस्तियों के गठन के मूल कारणों को संबोधित करने की आवश्यकता है।

सरकार के अलावा, कई गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) भी हैं जो मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए काम कर रहे हैं। ये एनजीओ शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और माइक्रोफाइनेंस जैसी कई तरह की सेवाएं प्रदान करते हैं। वे झुग्गियों में रहने वाले लोगों के अधिकारों की वकालत करने के लिए भी काम करते हैं।

भारत में मलिन बस्तियों की समस्या एक बड़ी चुनौती है, लेकिन इसे दूर किया जा सकता है। सही नीतियों और कार्यक्रमों के साथ, मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों के जीवन में सुधार करना और अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज का निर्माण करना संभव है।

संदर्भ

वनोलो, ए. (2018) वैकल्पिक पूंजीवाद और रचनात्मक अर्थव्यवस्थारू क्रिश्चियनिया का मामला। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अर्बन एंड रीजनल रिसर्च, 37(5), 1785-1798

एंथोपोलोस, एलजी, और वकाली, ए. (2019) शहरी नियोजन और स्मार्ट शहररू अंतर्संबंध और पारस्परिकता। द फ्यूचर इंटरनेट असेंबली में (पीपी. 178-189)। स्प्रिंगर, बर्लिन, हीडलबर्ग

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

हॉल, आरई, बोवरमैन, बी., ब्रेवरमैन, जे., टेलर, जे., टोडोसो, एच., और वॉन विमर्सपर्ग, यू. (2019) स्मार्ट सिटी का विजन (नंबर बीएनएल-67902 य 04042) कहेवन नेशनल लैब, अएन, एनवाई (यूएस)

ए., और फोंटाना, एफ. (2019) इतालवी मध्यम आकार के शहरों में स्मार्ट सिटी प्रतिमान का परीक्षण एक अनुभवजन्य विश्लेषण। आवास नीति बहस, 1-20.

पास्कलेवा, केए (2018) स्मार्ट सिटी खुले नवाचार के लिए एक गठबंधन? इंटेलिजेंट बिल्डिंग्स इंटरनेशनल, 3(3), 153-171

हॉजकिंसन, एस. (2019) क्या आपका शहर काफी स्मार्ट है? डिजिटल रूप से सक्षम शहर और समाज शहरी सदी, 98 में आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ाएंगे

किचन, आर. (2015) । स्मार्ट शहरों की समझ बनाना वर्तमान कमियों को दूर करना। कैम्ब्रिज जर्नल ऑफ रीजन्स, इकोनॉमी एंड सोसाइटी, 8(1), 131-13

कार्डुलो, पी., और किचन, आर. (2019) श्स्मार्ट सिटी में नागरिक बनना डबलिन, आयरलैंड में स्मार्ट नागरिक भागीदारी के मंच पर ऊपर और नीचे। जियो जर्नल, 84(1), 1-13

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies